KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/APR-JUN (2017)/VOL-4/ISS-2/A51 PAGE NO.381-387
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

नंदकिशोर आचार्य के अनुवाद एवं सम्पादन कर्म में आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति

[1]मुकेश कुमार शर्मा
[1]शोधार्थी हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
सम्पर्क- 67, आदर्श नगर, गुरुकुल रोड़
रेलवे स्टेशन के पूर्व में, चित्तौड़गढ़ (राज.)

विविध भाषाओं के साहित्य की प्रसिद्ध एवं युग सापेक्ष कृतियों का अनुवाद हिंदी में करने से इन भाषाओं में पाई जाने वाली ज्ञान राशि का आस्वादन पाठक कर पाए है। जिससे मनुष्य रूढ़ीवादी न होकर ज्ञान–विज्ञान के विविध पहलुओं का साक्षात्कार करता हुआ अपने जीवनपथ पर निरन्तर अग्रसर हो रहा है। इनका अनुवाद एवं संपादन कर्म ओढ़ी हुई मानसिकता का प्रतिफल न होते हुए एक स्वच्छ व स्वस्थ राष्ट्रीयता के निर्माण में सहायक रहा है। साहित्य समाज का प्रतिबिम्बि होता है। जैसे–जैसे मनुष्य की प्रवृत्ति में परिवर्तन होता है। वैसे–वैसे साहित्य–लेखन, साहित्यिक विचार, साहित्यिक मूल्य आदि भी युगीन परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं जिसे हम नंदकिशोर आचार्य के कविता संग्रह 'जल है जहाँ' (1980), 'वह एक समुद्र था'(1982) से प्रारम्भ करके 'केवल एक पत्ती ने', 'छीलते हुए अपने को', 'आकाश भटका हुआ' (2015), 'हवा की कोई मंजिल नहीं' (2016) इत्यादि पन्द्रह कविता संग्रहों में धारा की साकार अभिव्यक्ति देख सकते हैं। 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित चौथा तार सप्तक के कवि एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी नंदकिशोर आचार्य को अज्ञेय ने आपको 'जंगल की खूबसूरती के अनुकरणीय कवि' से नवाजा है। इनके द्वारा कागज पर लिखे गये शब्द, शब्द मात्र न होकर रचनाकार की हृदय संवेदना को साकार करते हैं। इन्होनें अवचेतन मन के विविध भावों में से मिथकों, किवन्दतियों, इतिहास की जाँच–पड़ताल, मानवीय संवेदनशीलता इत्यादि के विविध पहलुओं से वर्तमान पीढ़ी को अवगत कराया है। हिन्दी साहित्य को निश्छल अंतर्दृष्टि, नई दिशा और मूल्यों की सूक्ष्म पहचान इनके काव्य कर्म, उपन्यास, अनुवाद, नाट्यालेखन, आलोचना, लेख, निबन्ध, व्याख्यान इत्यादि से होती है। आचार्य जी ने अपनी रचनाधर्मिता से सभी का ध्यान आकर्षित करने का कार्य किया है। 1979 ई. में प्रकाशित चौथा सप्तक में इकलौते राजस्थान के कवि नंदकिशोर आचार्य ने वर्तमान मशीनीकरण, वैश्वीकरण एवं अंधानुकरण की परिस्थिति में भी मन के अन्तःकरण की अनुभूति को लोक–संस्कृति, समाज, ऐतिहासिकता इत्यादि के माध्यम से संजोने का कार्य किया है। विद्यार्थी जीवन में ही 'वातायन' पत्रिका में कुछ टिप्पणियाँ लिखी। इसी काल में एक महीने में ही कुछ व्यवधान आने के उपरान्त भी 'अज्ञेय की काव्यतितीर्षा' नामक पुस्तक लिखी जो 1970 में वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर से प्रकाशित हुई। इसे साहित्य जगत द्वारा सराहा गया। साथ ही अज्ञेय के साहित्य को इन्हीं के उपादानों/उपकरणों से परखने के कारण कुछ ने एक तरफा मूल्यांकन भी कहा क्योंकि इसमें अज्ञेय के सापेक्ष गुणों का वर्णन

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

किया गया है। कविता पत्रिका 'चिति' के सम्पादक, 'नया–प्रतीक' के सह–सम्पादक, 'अरुमरु' पाक्षिक एवं 'मरुदीप' साप्ताहिक के सम्पादक, 'सप्ताहान्त' साप्ताहिक के सहभागी सम्पादक के रूप में अपने सामाजिक अवदान से चेतना जागृत करने का कार्य करते रहे हैं। अज्ञेय द्वारा स्थापित 'वत्सल निधि' के न्यास धारी रहे हैं। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में कॉलम लेखन का कार्य किया। शिक्षा विभाग, बीकानेर की 'शिविरा पत्रिका' में 'आधुनिक शिक्षा दर्शन', इतवारीय पत्रिका में 'जायते–जायते', राजस्थान पत्रिका में 'साहित्यिक कॉलम' एवं 'जनसत्ता' में 6–7 वर्षों तक 'सम्प्रति' शीर्षक से कॉलम लेखन कार्य स्वयं के नाम से ही किया है। 'एवरीमेंस वीकली' में पत्रकारिता करते हुए संपादकीय विभाग से जुड़े रहे। महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (उत्तरप्रदेश) में 'अहिंसा और शान्ति पाठ्यक्रम' के तहत् एम. ए.एवं एम.फिल. के विद्यार्थियों को अध्यापन करवाने हेतु नियुक्त किया गया। यहाँ के अतिथि लेखक रहते हुए 'अज्ञेय संचयिता' का सम्पादन कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया। राजस्थान प्राकृत भाषा अकादमी, जयपुर के लिए 'अहिंसा विश्वकोश' का संपादन किया। इसका प्रकाशन 2010 ई. में किया गया जो विश्व का एकमात्र अहिंसा कोश है जिसमें न केवल भारतीय वरन् पाश्चात्य विचारकों के अहिंसा–विषयक विचारों को सम्मिलित करके अनुठा विश्लेषण किया गया है। नंदकिशोर आचार्य के लिए सृजन कर्म जीवनानुभूति को साकार करने का माध्यम रहा है। यह जीवनानुभूति उन्हें संवेदनात्मक स्तर पर व्याकुल करते हुए स्वयं को लेखन हेतु विवश करती है। इनकी रचनाएँ मात्र स्थूल अर्थ की अनुभूति को ही प्रकट नहीं करती वरन् अनेक आस्तिविक प्रश्नों से हमें रूबरू करवाने का कार्य करती है। कविता ही नहीं लेखन के विविध आयामों में भी इनकी मानवीय संवेदना प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिफलित होती रही है। ये गद्य–पद्य को दो विधाएँ न मानते हुए लेखन के दो भिन्न तरीके (अनुशासन) मानते है। जो प्रत्येक रचनाकार से भिन्न–भिन्न प्रकार की सोच, लेखन–शैली, शब्द संयोजन, वाक्य–विन्यास, भावात्मकता एवं रहस्य को कुछ खुला–कुछ अधखुला रखने की प्रकर्षता, रचना कर्म की अन्तः गुहा में प्रवेश करके उसमें छुपे हुए सांकेतिक भावों को प्रकट करने के लिए एक विशिष्ट दृष्टि एवं दृष्टिकोण की माँग इनका रचना कर्म करता है। इनका शब्दगत प्रयोग हमारे अन्तःकरण में प्रवेश करके आत्मिक अनुभूति को रचना के साथ प्रस्फुटित करने का कार्य करता है जो रचनाकार की रचनाधर्मिता की कसौटी माना जा सकता है। जो समकालीन कवियों में अपने तई का एक अलग कवि मानने को व्यग्र करता है।

अनुवाद कर्म

जितना सटीक इनका कवि कर्म, गद्य लेखन रहा है उतना ही सटीक अनुवाद कर्म भी रहा है ऐसे कार्य बहुमुखी प्रतिमा के धनी रचनाकार ही कर पाते हैं। जिस किसी भी क्षेत्र में लेखनी चलाई वो उतनी ही सार्थक सजग एवं प्रभावशाली रही है। ***नव मानववाद*** एम. एन. राय द्वारा लिखित 'न्यू ह्यूमेनिज्म' पुस्तक का हिन्दी अनुवाद नंदकिशोर आचार्य द्वारा किया गया। इसमें मानवेन्द्रनाथ राय के नव मानववादी दर्शन के विविध पहलुओं को समझाया गया है। इसमें सात शीर्षकों 'साम्यवादी घोषणा पत्र के बाद', 'प्रचलित धारणाओं की अपर्याप्तता', 'साम्यवादी सिद्धान्त और व्यवहार का अपकर्ष', 'मार्क्सवाद की उदार वंशावली', क्रांति का मार्क्सवादी सिद्धान्त', 'एक नया राजनीतिक दर्शन' एवं 'मौलिक लोकतंत्र' से अनुवाद किया है। इसमे मौलिक लोकतंत्र की बात करते हुए प्रत्येक उत्पादक वर्ग एवं जीव–प्रकृति आदि के अधिकारों को स्वतंत्र रखने का समर्थन किया है। स्वतंत्रता की तलाश के बारे में लिखा है कि यह– ''एक उच्चतर स्तर–बुद्धि और भावना के स्तर–पर अस्तित्व के लिए जैविक संघर्ष का ही नैरन्तर्य हैं।[1] परिशिष्ट के अंतर्गत चार शीर्षक दिए गए है जिनमें क्रमशः 'मौलिक मानववाद के सिद्धान्त सूत्र' (इसमे 22 सूत्र दिए गए है।) ; 'नव मानववाद का व्यवहार', 'विज्ञान और समाज' तथा 'एक नये समाज दर्शन की बुनियाद' शीर्षक है जो मानववाद की आत्मघुटन से बाहर निकलने के लिए साम्यवाद व पूँजीवाद की उन बुर्ज़ो को तोड़ते है जिन से ये उत्पन्न तो हुए लेकिन उन पर चल न सके केवल वाचिक अभ्यर्थना करके अपनी इतिश्री मानने लगे इत्यादि का वर्णन इनमें मिलता ***'साइंस एण्ड फिलॉसफी'*** पुस्तक का हिन्दी अनुवाद नंदकिशोर आचार्य द्वारा ***'विज्ञान और दर्शन'*** शीर्षक से किया गया।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

इस पुस्तक में विज्ञान एवं दर्शन संबंधित विविध विचारों को तर्किकता, ईश्वर संबंधी धारणा, तत्व एवं मनुष्य का संबंध, पृथ्वी की उत्पत्ति व उसके विभिन्न घटकों का अन्तर्सम्बन्ध, जीवन के रहस्यों, भौतिकतावाद दिक् और काल संबंधी धारणाओं इत्यादि को तर्क की कसौटी पर कस कर प्रस्तुत करने का कार्य किया गया है। इसमें कुल ग्यारह अध्याय है। आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान को समग्र दृष्टि से देखते हुए उसके दार्शनिक निहितार्थ को यह पुस्तक हमारे समक्ष रखती हुई बताती है कि– ''विविध वैज्ञानिक शाखाओं की ज्ञान धाराएँ कैसे एक ही मिलन–बिन्दु पर एकाग्र है और इस मिलन बिन्दु से जीवन दर्शन का एक नया प्रवाह कैसे निसृत होता है।''[2]'ज्ञान का वैज्ञानिक सिद्धान्त' में ज्ञान को एक वस्तु माना है– ''ज्ञान एक वस्तु है एक विशेष प्रकार की वस्तु, लेकिन हर हाल में एक वस्तु। इसी कारण यह विषयनिष्ठ है। आनुवांशिकी में निर्भर किन्तु अस्तित्व में स्वयंपूर्ण; और वृत्ति में सृजनात्मक।''[3] इसी सृजनात्मक की देन से विज्ञान दिन पर दिन विकास के पथ पर अग्रसर होता चला जा रहा है। अर्नोल्ड वेस्कर के अंग्रेजी नाटक 'दि फोर सीजन्स' का हिन्दी रूपान्तर नंदकिशोर आचार्य द्वारा ***'मौसम–दर–मौसम'*** शीर्षक से किया गया। यह नाटक प्रकृति और मानवीय सम्बन्धों को रोमानी तरीकों से प्रकृति के मौसम–दर–मौसम बदलते स्वरूप के साथ स्त्री–पुरुष के अन्तंरग सम्बन्धों को इसका कथानक बनाया गया है। इसमें सर्दी, बसन्त, गर्मी, पतझड़ के बहाने सम्बन्धों की परत–दर–परत उधड़े बुन से अतीत, वर्तमान और भविष्य की यात्रा करवाने का कार्य किया गया है। अनुवाद के संबंध में देवेन्द्र राज अंकुर ने निर्देशकीय वक्तव्य में लिखा है कि– ''नंदकिशोर आचार्य के अनुवाद में लगातार ऐसी संम्भावनाएँ बनती रहती है कि जहाँ अलग–अलग स्थितियाँ है, फिर भी घूम–घूम कर एक वृत्ताकार रूप में आती रहती है और मौसम दर–मौसम एक साइकिल सा चलता रहता है।''[4] इसका प्रथम प्रदर्शन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में 12 जून 2005 को हुआ। इस नाटक ने आदम एवं बिएट्रीस का यह संवाद दोनों के जीवन में एक आदमी और एक से अधिक आदमी को जानने संबंधी विचार कितना प्रासंगिक है– ''आदम : नहीं, सचमुच नहीं। ये बेवकूफी थी, नही? एक से ज्यादा को जानने की कोशिश हमेशा बेवकूफी होती है। एक आदमी से ज्यादा को जानना उन्हें धोखा देना है। बिएट्रिस : इस के उलट, सिर्फ़ एक आदमी को जानना दुनियाँ को धोखा देना है।''[5] इसमें नाटककार की लेखन शैली, भावों की सूक्ष्म पड़ताल व अनुवाद कर्म की प्रखरता को परखा जा सकता है कि वह कितनी सटीक रही है।

संपादन कर्म

नंदकिशोर आचार्य का संपादन कर्म विस्तृत रहा है। इनके द्वारा संपादित प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है– संवेदन इति (प्रथम सं. अप्रेल 1967 ई.), रचेगा संगीत (5 सितम्बर 1978 ई.),संक्रान्ति और सनातनता (डॉ. छगन मोहता) (1996 ई.),पत्थर और बहता पानी (निर्मल वर्मा) (2000 ई.), अनौपचारिक शिक्षा और विकास, लेखक की आस्था (निर्मल वर्मा) (2001ई.),अज्ञेय संचयिता(2001ई.), लेख का दायित्व (अज्ञेय)(2002 ई.),दीवाने गालिब (2003ई.,2013ई.), सूर सौरभ(2003 ई),मीरा माधव(2003 ई.),दीवाने मीर(2006 ई.),प्रेमचन्द का चिन्तन (2006 ई.),अहिंसा विश्वकोश (2010 ई.)इत्यादि है। ***संवेदन इति*** कविता –संग्रह का संपादकीय नंदकिशोर आचार्य द्वारा लिखा गया जबकि कविता : एक पर्यवेक्षण' शीर्षक से कविता के वर्तमान परिवेश का वर्णन प्रकाश परिमल ने किया है। इसमें छः कवियों की सैतीस कविताएँ है। प्रकाश परिमल की छः, नंदकिशोर आचार्य की नौ, योगेन्द्र किसलस की छः, रामदेव आचार्य की चार, गौरी शंकर अरुण की छः तथा पुष्कर शर्मा की छः कविताओं को इसमें स्थान दिया गया है। आचार्य की 'कविता–5 में कवि की मनसाओं व अभिव्यक्ति की भटकन को देखा जा सकता है– *सीली लकड़ी सा/सुलग रहा मन !/चिन्हीं–अनचीन्हीं/मनसाओं का/घुटता दम !/ सपनों की आँखे नम!/उभरती–तनसी यादों का/घिर आया मौसम !/अभिव्यक्ति को भटक रहे/भावों का जीवन.../तुम बिन !* [6]कवि ने संवेदना का जो बीज बोया जो आगे चलकर वृक्षाकार गृहण करता है जिसके पक्ष विविध रूपों में सार्थक हो जाते हैं। ***रचेगा संगीत*** का शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर के लिए शिक्षक दिवस (5 सितम्बर 1978) के अवसर पर विभाग द्वारा शिक्षकों की सृजनात्मकता के प्रश्रय देने हेतु 'रचेगा संगीत' नामक कविता संकलन का सम्पादन नन्दकिशोर आचार्य द्वारा किया गया। पिछले

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

तीस वर्षों के परिवेश को ये कविताएँ प्रकट करती है जो निराशा एवं मोहभंग के साथ व्यंग्यात्मक तरिकों से राजनैतिक एवं आर्थिक तनावों को भी अपने में समाहित किए हुए है। इनकी बनावट मात्र बाह्य आकार प्रकर कविता की आभ्यन्तरिक प्रक्रिया को प्रकट करने का माध्यम रही है। इसको तीन खण्डों में 'हरी डाल' के अन्तर्गत कविता लेखन में पारंगत सात कवियों की सतरह कविताओं को स्थान दिया है। 'चीकने पात' खण्ड में सोलह कवियों की बत्तीस कविताओं तथा 'अंखुआते बीज' खण्ड में बाईस कवियों की बत्तीस कविताओं को स्थान दिया है। भवानीशंकर व्यास 'विनोद' नामक कवि ने अपनी कविता में प्रकृति, प्रेम, शब्दों में छिपे सत्य को उजागर करते है– *कविता शब्दों का खेल नहीं/भावों का गुम्फन नहीं मात्र/शब्दों के बीच सत्य की जो पहचान करे–/वह कविता हैं।* [7] डॉ. छगन मोहता के संस्कृति दर्शन को ***'संक्रान्ति और सनातनता'*** शीर्षक से नंदकिशोर आचार्य द्वारा सम्पादित किया गया है। इसमें कुल नौ निबन्ध है जो उनके व्याख्यानों का लिपिबद्ध प्रस्तुतीकरण है। इनमें सनातन दृष्टि को वर्तमान समाज से अर्न्तग्रंथित करके अध्ययन करने की महती आवश्यकता है। संस्कृतियों का मूल आधार आध्यात्मिकता है। 'कस्मै देवाय हविषा विधेन' निबंध में इसे समझाते हुए अपनी बुनियादी मान्यता प्रस्तुत की है– ''जो पिण्ड में है मूलतः वही तत्व ब्रह्माण्ड में है और जो ब्रह्माण्ड में है वही तत्व पिण्ड में है।''[8] इसके अतिरिक्त 'सामाजिक पुनर्रचना के आधार', 'मनुष्य : गुरुमान नरपशु', 'भारतीय परम्परा : मूल दृष्टि', 'भारतीय परम्पराः आधुनिक समाज', 'पर्यावरण और सनातन दृष्टि', मानवीय मूल्यों का क्रम विकास' तथा 'आधुनिकता की समस्याएँ' इत्यादि निबन्धों में मोहताजी की के विचारों को वर्णित किया गया हैं।

पत्थर और बहता पानी मे निर्मल वर्मा के सांस्कृतिक चिन्तन को 'पत्थर और बहता पानी' शीर्षक से नंदकिशोर आचार्य ने सम्पादित किया है। इसका प्रकाशन 2000 ई. में वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर से हुआ। इसमें कुल दस निबन्धों को लिया गया है जिनमें परम्परा बोध, इतिहास बोध, भाषा, राष्ट्रीय अस्मिता, संस्कृति, धर्मतन्त्र, राजनीति इत्यादि से संबंधित विचारों को सम्मिलित किया गया हैं। प्रमुख निबंध 'अतीत : एक आत्म–मन्थन', 'शताब्दी के ढ़लते वर्षों में', 'भारतीय संस्कृति और राष्ट्र', 'पत्थर और बहता पानी' इत्यादि हैं। इनमें भारतीय और यूरोपीय परम्पराओं के मर्म को ऐतिहासिक संदर्भ में समझा जा सकता हैं। ***लेखक की आस्था*** मे निर्मल वर्मा के पन्द्रह साहित्यिक निबन्धों का संपादन नंदकिशोर आचार्य द्वारा 'लेखक की आस्था' शीर्षक से किया गया। यह निर्मल वर्मा के कला, साहित्य, मिथक, सृजन कर्म, सम्प्रेषण के संकट, सौन्दर्य इत्यादि से सम्बन्धित चिन्तन हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। प्रमुख निबंधों में 'रचना की जरूरत', 'कला की प्रासंगिकता', 'साहित्य और लेखक की आस्था', 'कलाकृति, समाज और आलोचना', 'काल और सृजन', 'सम्प्रेषण का संकट', 'लेखक की स्वतन्त्रता : आज के सन्दर्भ में', 'क्या साहित्य समाज से कट चुका है', 'सौन्दर्य की छायाएँ' इत्यादि प्रमुख है। 'रचना की जरूरत' निबंध में कविता का जन्म भाषा के कायाकल्प से माना, जो सम्प्रेषणीय नहीं होता उसे भी कला हमेशा सम्प्रेषित करती है। कविता के अर्थ के संबंध में लिखा है कि ''अक्सर कविता का अर्थ उसमें नहीं होता जो कहा जा रहा होता है, बल्कि वहाँ होता है जहाँ वह शब्दों के इर्द–गिर्द एक आलोक वृत्त बुनता है– भाषा के भीतर एक और भाषा में।''[9]

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के लिए प्रकाशित ***'अज्ञेय संचयिता'*** का प्रकाशन 2001 ई. में राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली से हुआ। यह पुस्तक छः खण्डों में विभाजित है। काव्य खण्ड में 134 कविताएँ, कथा–खण्ड में छः कहानियाँ– 'विवेक से बढ़कर', 'गैग्रीन', 'जिजीविषा', 'हीली–बोन् की बतखें', 'मेजर चौधरी की वापसी', उपन्यास–खण्ड में 'अपने–अपने अजनबी', 'शेखर : एक जीवनी (एक अंश)', चिन्तन खण्ड में 'नौ' व्याख्यान, अभिभाषण, लेख आदि; विविध के अन्तर्गत–ललित निबंध ('ताली तो छूट गई', 'मरूथल की सीपियाँ, छाया का जंगल') यात्रावृतान्त (बीसवीं शती का गोलोक) संस्मरण (वसन्त का अग्रदूत) आत्मपरक ('ऋण–स्वीकारी हूँ', 'अज्ञेय : अपनी निगाह में') तथा परिशिष्ट में अज्ञेय के जीवनवृत्त, प्रकाशित कृतियाँ, संपादित ग्रंथ, अनुवाद एवं अज्ञेय साहित्य पर अध्ययन दिया गया है। इसकी भूमिका 'अज्ञेय : स्वातन्त्र्य का बहुआयामी अन्वेषण' शीर्षक से नंदकिशोर आचार्य ने लिखी है। जो अज्ञेय की विविध विशेषताओं को रेखांकित करती है। ***लेखक का दायित्व*** मे अज्ञेय के दस साहित्यिक निबन्धों को 'लेखक का दायित्व' शीर्षक से नंदकिशोर आचार्य ने सम्पादित किया है। इसका सम्पादकीय 'कालबोध, रूपबोध और मूल्य बोध की

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

त्रीवेणी' शीर्षक से लिखते हुए परम्परा को नयी प्रयोगशीलता की आधारभूमि, समकालीन चुनौतियों और नयी सर्जनात्मक संभावनाओं में अज्ञेय के साहित्य चिन्तन की सार्थकता मानते है– ''रचना कालबोध, रुपबोध और मूल्यबोध की त्रिवेणी का संगम हो जाती है।''[10] प्रमुख निबन्धों में 'सौन्दर्यबोध और शिवत्व बोध', 'कविता श्रव्य से पाठ्य तक', 'काव्य का सत्य और कवि का वक्तव्य', 'साहित्यिक काल : यथार्थ का क्रम' इत्यादि प्रमुख हैं।

अवलोकन : निर्मल वर्मा मे निर्मल वर्मा के रचना कर्म का अनुभूत्यात्मक चिंतन विविध विज्ञ आलोचक कवियों की लेखनी के माध्यम से प्रकट हुआ हैं। इसको सम्पादित करने का कार्य नंदकिशोर आचार्य द्वारा किया गया। पुस्तक दो खण्डो में विभक्त हैं। प्रथम खण्ड़ में ग्यारह आलेख हैं। जिनमें से प्रमुख 'कथा पुरुष' (मदन सोनी), 'राग–विराग की गोधूलि गल्प' (अशोक वाजपेयी), 'सुलगते क्षण में अँधेरे के बीच'(नंदकिशोर आचार्य) ,' शब्द और स्मृति : एक सार्वजनिक एकालाप' (रमेशचंद्र शाह) इत्यादि प्रमुख है। द्वितीय खण्ड़ में कुल पन्द्रह आलेख है। जिसमें 'नई कहानी की पहली कृति : परिन्दे' (नामवर सिंह),' भाषा से परे' (कुंवर नारायण), 'अन्तिम अरण्य : जो अन्तहीन अरण्य भी है' (श्री लाल शुक्ल), 'आत्मा की परमात्मा – निरपेक्ष तलाश' (डॉ. नवल किशोर), 'समय की फुसफुसाहट को सुनते हुए' तथा 'मृत्यु में जीवन के यथार्थ की तलाश' (नंदकिशोर आचार्य) आदि प्रमुख है। 'समय की फुसफुसाहट को सुनते हुए' में आचार्य जी ने' शब्द और स्मृति' तथा ढ़लान से उतरते हुए' के आधार पर वर्मा जी के रचनाकर्म के विविध पहलुओं में से 'ऋत' और 'धर्म' की अवधारणाओं का समावेश, अर्थसता और राज्य सता पर धर्म के अनुशासन की अनिवार्यता, पर्यावरण संकट, इत्यादि को रेखांकित किया है। इनकी सार्थकता के संबंध में लिखा है कि– ''वे सत्य को पाने की सम्भावनाओं के नष्ट होने के कारणों का विश्लेषण करते हुए उन्हें पुनः मूर्त करने के लिए हमें प्रेरित करते और साथ ही एक लेखक की हैसियत से यह भी बराबर स्मरण दिलाते रहे कि उपन्यास में जातीय रूप की सम्भावनाएँ और वर्तमान इतिहास–ग्रस्त परिस्थिति से उबरने के रास्ते किस प्रकार एक –दूसरे से अभिन्न है।''[11] 'ग़ालिब' के शे'रो को ***'दीवाने–गालिब'*** शीर्षक से संपादित करने का कार्य नंदकिशोर आचार्य के द्वारा किया गया। इसके संपादकीय वक्तव्य 'ईयाँ मुझे रोके है ती खींचे है मुझे कुफ़्र' शीर्षक से दिया गया है। इसमें गालिब को भारतीय भाषाओं के प्रथम आधुनिक कवि के रूप में स्वीकृति दी है। आधुनिकता की मूल दृष्टि में मानवीय अनुभव और विवेक को केन्द्र में माना है। इसमें गालीब के मानवीय स्वतंत्रता बोध, भावानुभूति की सघनता, गहन आत्मान्वेषण, विनोद प्रियता की वेदना में घुला आत्म व्यंग्य, मानवीय अंतर्द्वन्द्व इत्यादि को रेखांकित किया गया है। आधुनिक मन के अन्तर्द्वन्द्व के संबंध में लिखा है कि– ''यह अन्तर्द्वन्द्व आधुनिक साहित्य की प्रामाणिक पहचान है बल्कि जो लोग किसी गन्तव्य को पहचान पाने का दावा करते भी है, उन के दावे की प्रामाणिकता की परख भी इसी बात से होती है कि उनकी कविता उस गन्तव्य को जान लेने के पूर्व एक गहरे अन्तर्द्वन्द्व से गुज़रने का प्रमाण देती है या नहीं।''[12] प्रामाणिकता को प्रक्रिया और गन्तव्य को यात्रा सदृश्य मानकर आगे बढ़ने का ज़िक्र मिलता है। शेरो के अतिरिक्त सेहरा, रुबाई, क़तका, फुटकर शेर आदि को भी अन्त में सम्मिलित किया गया है। ***सूर सौरभ*** मे सूरदास के 189 पदों को 'सूर सौरभ' शीर्षक से नंदकिशोर आचार्य ने संचयन व सम्पादित किया है। प्रत्येक पद के साथ उसके राग का नाम दिया गया है। इनके पदों में राग बिलावल, राग कान्हरौ, राग धनाश्री, राग रामकली, राग नट, राग टोड़ी, राग झिंझौटी, राग देवगंधार एवं राग सौरठ इत्यादि की अधिकता है। कवि की अनुभूति को मूलतः आत्मानुभूति मानते हुए। संपादकीय 'लौकिक के अध्यात्म की अनुभूति' शीर्षक से लिखा है जिसमें सूरदास की मूल प्रवृतियों को रेखांकित किया गया है। काव्यानुभूति की प्रक्रिया को वस्तु विशेष में विद्यमान अन्तर्निहित आत्म बोध की प्रक्रिया कहा है। अनुभूति के संबंध में लिखा है– ''अनुभूति सबसे प्रामाणिक ज्ञान है ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता के एकत्व का बोध ही तो है।''[13] ***मीरा माधव*** मे मीरा के 245 पदों को संपादित करने का कार्य नंदकिशोर आचार्य द्वारा किया गया। इसका शीर्षक 'मीरा माधव' रखा गया। इसकी प्रमुख विशेषताओं में पदों के चयन में संवेदना, राग एवं ताल का नाम प्रत्येक पद के साथ देते हुए तथा इसकी मूल प्रवृति को भी कोष्ठक में देने का कार्य किया गया है। साथ ही कठीन शब्दों का अर्थ भी दिया गया है। भूमिका का शीर्षक 'काव्यानुभूति की प्रामाणिकता' रखते हुए भारतीय व सूफी में प्रिय की छवि में पाये जाने वाले भेद को बताते हुए भारतीय भक्त कवयित्रीयों से मीरा की तुलना, भक्ति में प्रिय के संयोग व वियोग श्रृंगार का वर्णन, आध्यात्मिक

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

परमसत्ता की अनुभूति, लाक्षणिक प्रयोगों की न्यूनता आदि को रेखांकित किया गया है। पदों की गहन अनुभूति और तन्मयता भाषा को प्रामाणिक बनाने का कार्य करती है– ''कविता प्रामाणिक अनुभूति का सम्प्रेषण है और यदि मीरा की कविता इस कसौटी पर खरी उतरती है तो उसके सर्जनात्मक सामर्थ्य को दोयम दर्जे का मानना उचित नहीं कहा जा सकता। यह खरी संवेदना और प्रामाणिक अनुभूति की कविता है जो अपने लिए एक प्रामाणिक भाषा सम्भव करती है।''[14] मीरा का प्रेम राग–कालिगड़ा व ताल कहरवा में है– *''साँवरे रँग राची, राणाँजी हूँ तो।*

बाँध घूघरा प्रेम का, हूँ हरि आगे नाची। (टेक)''[15]

दीवाने – मीर मे मीर तक़ीं मीर' की शायरी को एक पुस्तकाकार रूप में संपादित करने का कार्य नंदकिशोर आचार्य द्वारा किया गया है। इसका संपादकीय 'प्रामाणिक अनुभूति की शाइरी' शीर्षक से लिखा है। इसमें मीर को उर्दू का पहला रोमांटिक शाइर, इतिहास व कविता के संबंध, आध्यात्मिक बैचेनी की गहराई इत्यादि रूप में वर्णित किया है। बड़े व औसत कवि के संबंध में लिखा है कि– ''एक बड़ा कवि इसी तरह समय को ग्रहण करता और उससे कविता बरामद करता है, जब कि एक औसत कवि समय की अनुभूति में नहीं, उस के संदर्भ के आतंक के साये में जीता है।''[16] मीर ने आचार्य जी को लेखन के स्तर एवं अनुभूति के लेखांकन की शैली हेतु प्रभावित किया। वे इनके शेरों से संवाद करके कविता भी लिख रहे है इन दिनों, जो इनके भावात्मक संबंधों का प्रमाण है।

प्रेमचन्द का चिन्तन मे कथासम्राट प्रेमचन्द द्वारा मार्च, 1912 से सितम्बर, 1936 के मध्य लिखित इक्कीस आलेखों का संपादन नंदकिशोर आचार्य द्वारा किया गया। इसका संपादकीय 'आत्मवाद की सामाजिकी' शीर्षक से लिखते हुए आचार्य जी ने प्रेमचन्द के लेखन में छुपी चिन्तन की विविध धाराओं को परत–दर–परत खोलने का कार्य किया है जिसमे आत्मवाद, आध्यात्मिक बोध, धर्म, नैतिकता, कला इत्यादि प्रमुख है। अंग्रेजी शिक्षा द्वारा कुचले गए आत्म, शिक्षा की बदलती व्यवस्थाओं में दबते आत्म को भी रेखांकित किया है। 'स्वराज के फायदे' आलेख में लिखा है– ''जिनकी आत्मा ही दब गयी, वे स्वराज्य और स्वाधीनता की कल्पना भी नहीं कर सकते। यह तो हुआ शिक्षा का हाल।''[17] प्रमुख आलेख 'हिन्दू सभ्यता और लोक–हित', 'मानसिक पराधीनता', 'श्रीकृष्ण और भावी जगत', 'हिन्दू– मुसलिम एकता', 'शिक्षा का नया आदर्श', 'साम्प्रदायिकता और संस्कृति', 'साहित्य का उद्देश्य', 'महाजनी सभ्यता' इत्यादि है।

अहिंसा विश्वकोश मे हिन्दी में तो है ही लेकिन विश्व में भी संभवः यह एक अकेली पुस्तक है जो अहिंसा के विविध पक्षों, विचारों, धर्मों, व्यक्तियों, प्रवृत्तियों इत्यादि का न केवल क्रमवार प्रस्तुतीकरण करती है वरन् उसमें विचारकों के गहन चिंतन के साथ आचार्यजी की टिप्पणीयों को भी प्रकट करती है जो इनकी उन विषयों पर न केवल गहरी पकड़ वरन् मूल प्रवृत्तियों को भी सप्रमाण प्रस्तुत करती है। इसका प्रथम संस्करण 2010 ई. में, प्राकृत भारती अकादमी, 13–ए, गुरूनानक पथ, मेन मालवीय नगर, जयपुर से प्रकाशित हुआ। इसकी परामर्श समीति में चौहद सदस्य रहे। 'जीवन का नियम है अहिंसा' नामक व शीर्षक से पुरोवाक् में सम्पादक ने अपने इस कार्य के पीछे छिपे मन्तथ्य को उजागर किया है। जिसमें संस्कृति को मूल्यान्वेषण और मूल्यानुभूति की निरन्तर गत्यात्मक प्रक्रिया, मनुष्य को मूल्य–सृष्टा, संस्कृति का आधार सामाजिक मूल्यों को और उसकी कसौटी आचरण को, वैदिक प्राचीन–मध्यकालीन–आधुनिक विचारकों के विचारों के साथ चीनी, रुसी, यूनानी इत्यादि देशों के दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों, वैज्ञानिकों इत्यादि के मंतों को सप्रमाण व सटीक रूप में प्रकट करना इत्यादि प्रमुख हैं। यह पाँच खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड अपने आप में विशेष महत्व रखता है। अहिंसा से संबंधित विचारों को न केवल हिन्दी भाषा बल्कि उर्दू, अंग्रेजी, अरबी के शब्दों का हवाला देते हुए उसकी तह तक जाकर भावों एवं विचारों को समझाने का कार्य यह कोश करता है जिनके अन्त में आचार्य जी का विश्लेषण भी अपनी एक महती भूमिका रखता है जो अहिंसा की गहरी पैठ को उजागर करती है। जैसे अद्ल (न्याय), अंतर्वलित तंत्र (Implicate Order), अनासक्ति, क्रांतिकारी हिंसा, क्वेकरवाद, खाद्य–कृषि हिंसा, गरिमा, पितृसत्तात्मक हिंसा, पृथ्वी दिवस, विश्व सरकार, शांति शिक्षा इत्यादि का विभिन्न दृष्टियों एवं दृष्टिकोणों से विवेचन प्राप्त होता है जो इसे अपने तरह का एक अहिंसात्मक विश्वकोष प्रमाणित करता है। उपर्युक्त विवेचनोपरान्त कहा जा सकता है कि नंदकिशोर आचार्य के अनुवाद एवं संपादन कर्म में इनकी गहन चिंतन शैली, युग एवं समय की माँग को देखते हुए

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

हिंदी एवं उर्दू के प्रसिद्ध रचनाकारों की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को रेखांकित करने का कार्य इनका यह कर्म करता है। रचनाकार विशेष पर शोध करने वाले शोधार्थियों एवं सजग सामाजिक के लिए भी इनका कार्य उपयोगी है। रचनाकार की मूलभूत विशेषताओं को रेखांकित करते हुए उनके प्रति एक सजग एवं स्पष्ट दृष्टिकोण निर्मित करने में ये पुस्तकें अपनी महत्ती भूमिका निभा रही है। जिस गहन संवेदनात्मक स्तर को ध्यान में रखकर रचनाकार ने रचना की है उसकी समझ बनाने में ये पुस्तकें अपनी सार्थक भूमिका निभा रही है। पूर्वाग्रह मुक्त होकर इनका अध्ययन किया जाए तो ये रचना के पार के द्वार को भी प्रकट करने में सफल रहेगी।

संदर्भ सूची

1. एम.एन. राय : *नव माननवाद* (अग्रेजी से अनुवाद : नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर, 1998, पृष्ठ 45
2. एम.एन. राय : *विज्ञान और दर्शन* (अग्रेजी से अनुवाद : नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर, 1998, बाएँ फ्लेप से
3. वही, पृष्ठ 109
4. अर्नोल्ड वेस्कर : *मौसम दर–मौसम* (अग्रेजी से अनुवाद : नंदकिशोर आचार्य), निर्देशकीय वक्तव, पृष्ठ 9
5. वही, पृष्ठ 70
6. नंदकिशोर आचार्य : 'कविता–5' (नंदकिशोर आचार्य) *संवेदन इति,* सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, 1967, पृष्ठ 36
7. भवानी शंकर व्यास 'विनोद' : 'वह कविता है', *रचेगा संगीत* (नंदकिशोर आचार्य), राजस्थान प्रकाशन, जयपुर, 1978, पृष्ठ 79
8. डॉ. छगन मोहता : 'कस्मै देवाय हविषा विधेन', *संक्रान्ति और सनातनता* (नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1996, पृष्ठ 11
9. निर्मल वर्मा : 'रचना की ज़रूरत' *लेखक की आस्था* (नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2001, पृष्ठ 13
10. नंदकिशोर आचार्य : 'कालबोध, रूपबोध और मूल्य बोध की त्रिवेणी', *लेखक का दायित्व* (नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2002, पृष्ठ 8
11. नंदकिशोर आचार्य : 'मृत्यु में जीवन के यथार्थ की तलाश', *अवलोकन : निर्मल वर्मा* (नंदकिशोर आचार्य), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ 286
12. नंदकिशोर आचार्य : 'ईमाँ मुझे रोके है तो खींचे है मुझे कुफ़्र' *दीवाने–गालिब* (नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2003, पृष्ठ 7
13. नंदकिशोर आचार्य : 'लौकिक के अध्यात्म की अनुभूति', *सूर–सौरभ* (नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2003, पृष्ठ 9
14. नंदकिशोर आचार्य : 'काव्यानुभूति की प्रामाणिकता', *मीरा माधव* (नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2003, पृष्ठ 10
15. नंदकिशोर आचार्य : 'काव्यानुभूति की प्रामाणिकता', *मीरा माधव* (नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2003, पृष्ठ 127
16. नंदकिशोर आचार्य : 'प्रामाणिक अनुभूति की शाइरी', *दीवाने मीर,* (नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2015, पृष्ठ 4
17. प्रेमचन्द : 'स्वराज के फायदे', *प्रेमचन्द का चिन्तन* (नंदकिशोर आचार्य), वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2003, पृष्ठ 43

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org